

Padma Shri



SHRI SUBBU ARUMUGAM

Shri Subbu Arumugam is an exponent of ancient folk art and performer of Villupattu of Tamil Nadu. His dedication to the tradition of Villupattu has made him a pole star in the cultural horizon of India.

2. Born on 28th June, 1928, Shri Arumugam hails from a traditionally and culturally vibrant family in Tirunelveli, the well-known abode of Tamil culture and tradition, the little Subbu Arumugam grew as a torch-bearer of all the venerable values of his parents, father Shri A. Subbiah and mother Smt. Subbammal. The creative upsurge in him took flight and he became proficient in writing lyrics and poetry. The course at the Madurai Tamil Sangam stood him in good stead and he emerged as an artiste of reckoning in writing poetry and performing Villupattu. His maiden poetic work at the age of 16 titled 'Kumaran Pattu' became popular and received wide acclaim.

3. Shri Arumugam has been tirelessly performing Villupattu for more than 6 decades. His performances are broadcast on All India Radio, Doordharshan and numerous television channels. In addition, he has been performing for sabhas, educational institutions, temples, universities and various other fora. He has secured a number of accolades to this art by taking it globally to Singapore, Sri Lanka, Muscat and almost all states in India. His Villupattus are not only of entertainment value, but also of educative and informative purposes. Villupattu has become a powerful medium of communication. He harnessed Villupattu with great dexterity to put forward meaningful messages to educate, inspire, motivate, encourage and reform society.

4. Shri Arumugam breathes the spirit of nationalism, harmony and solidarity. His performances are packed with his focus on morals, folk music, humorous repartees, literary rendition and Indian Culture. To ensure this preservation and glory of Villupattu he has drawn his entire family into the tradition. The legacy of Villupattu is being carried on now all over the world by his second and third generations. Being a poet and writer basically, Shri Arumugam has penned 47 novels earlier. He has also authored many books like 'Villisai Ramayanam' 'Villiasai Mahabharatham' 'Neengalum Villupattu Padalam' 'Gandhi Vandhar' 'Nellin Kadhai' and 'Noolagam Valarum Kadhai'. Villupattu based CD's and DVD's on different subjects have also released by him.

5. Shri Arumugam has been honoured with a number of awards and honours including 'Kalaimamani' by Government of Tamil Nadu (1975) ; 'Villisai Vendhar' by Variyar Swamigal; 'Bharathi Award' by Government of Tamil Nadu (2017) ; 'Thamizh Thiru' by The Hindu Tamil; 'For the Sake of Honour Award' by Madras Coromandel Rotary Club; 'Tamil Sandror Award' by Raja Sir Annamalai Chettiyar Memorial Trust; 'Vibrant Indian Award' by Developers India; 'Isai Ratna' by News 7 Channel from the Hon'ble Governor of Tamil Nadu; 'Lifetime Achievement Award' by Muscat Tamil Sangam. He has also received Sangeet Natak Akademi Award from the then Hon'ble President of India, Dr. A.P.J. Abdul Kalam in 2005.



श्री सुब्बू आरुमुगम्

श्री सुब्बू आरुमुगम् तमिलनाडु की प्राचीन लोक कला के उन्नायक और विल्लुपत्तु प्रदर्शनकार हैं। विल्लुपत्तु परम्परा के प्रति उनके लगाव ने उन्हें भारत के सांस्कृतिक आकाश का एक चमकता सितारा बना दिया है।

2. 28 जून, 1928 को जन्मे, श्री आरुमुगम्, तमिल संस्कृति और परंपरा के जाने-माने केंद्र तिरुनेलवेली के एक पारंपरिक और सांस्कृतिक रूप से सक्रिय परिवार से सम्बंध रखते हैं। बालक सुब्बू आरुमुगम् अपने पिता श्री ए. सुब्बैया और माता श्रीमती सुब्बम्मल के सभी श्रेष्ठ संस्कार का पालन करते हुए बड़े हुए। उनके अंतर्मन के सृजनभाव ने उड़ान भरी और वे गीत और कविता लिखने में पारंगत हो गए। इस उपलब्धि में मदुरै तमिल संगम का पाठ्यक्रम उपयोगी सिद्ध हुआ और कविता लेखन और विल्लुपत्तु के एक कलाकार के रूप में उनकी ख्याति बढ़ने लगी। 16 वर्ष की आयु में उनकी पहली काव्य कृति 'कुमारन पत्तु' काफी लोकप्रिय हुई और उन्हें व्यापक प्रशंसा मिली।

3. श्री आरुमुगम् छह दशक से अधिक समय से विल्लुपत्तु का अनवरत प्रदर्शन कर रहे हैं। उनका प्रदर्शन आकाशवाणी, दूरदर्शन और कई टेलीविजन चैनलों पर प्रसारित होता है। इसके अलावा, वह सभाओं, शैक्षिक संस्थानों, मंदिरों, विश्वविद्यालयों और अन्य मंचों के लिए भी प्रदर्शन करते रहे हैं। उन्होंने इस कला को विश्व स्तर पर सिंगापुर, श्रीलंका, मस्कट और भारत के लगभग सभी राज्यों में ले जाकर अनेक बार सराहना हासिल की है। उनका विल्लुपत्तु केवल मनोरंजन के लिए नहीं है, बल्कि यह शिक्षाप्रद और ज्ञानवर्धक भी है। विल्लुपत्तु सम्प्रेषण का एक शक्तिशाली माध्यम बन गया है। उन्होंने समाज को शिक्षा, प्रेरणा, प्रोत्साहन और सुधार का सार्थक संदेश देने के लिए विल्लुपत्तु का प्रयोग अत्यंत निपुणता के साथ किया है।

4. श्री आरुमुगम् राष्ट्रीयता, समरसता और एकता की भावना का प्रचार-प्रसार करते हैं। उनके प्रदर्शन में नैतिकता, लोक संगीत, हास-परिहास, साहित्यिकता और भारतीय संस्कृति पर बल दिया जाता है। विल्लुपत्तु के इस संरक्षण और गौरव को बनाए रखने के लिए उन्होंने अपने पूरे परिवार को इस परंपरा से जोड़ा हुआ है। अब विल्लुपत्तु की इस विरासत को दुनिया भर में उनकी दूसरी और तीसरी पीढ़ी द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है। मूल रूप से कवि और लेखक होने के नाते, श्री आरुमुगम् ने शुरुआत में 47 उपन्यास लिखे हैं। उन्होंने 'विल्लीसाई रामायणम्', 'विल्लीसाई महाभारतम्', 'निंगालुम् विल्लुपत्तु पदलम्', 'गांधी वंधर', 'नेल्लिन कधाई' और 'नूलगम वलारुम् कधाई' जैसी अनेक पुस्तकें भी लिखी हैं। उनके द्वारा विभिन्न विषयों पर विल्लुपत्तु आधारित सीडी और डीवीडी भी जारी की गई हैं।

5. श्री आरुमुगम् को कई पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं जिनमें तमिलनाडु सरकार द्वारा 'कलायामाणि' (1975); वरियार स्वामीगल द्वारा 'विल्लीसाई वंधर'; तमिलनाडु सरकार द्वारा 'भारती पुरस्कार' (2017); हिंदू तमिल द्वारा 'तमिज थिरु'; मद्रास कोरोमंडल रोटरी क्लब द्वारा 'फॉर द सेक ऑफ ऑनर अवार्ड'; राजा सर अन्नामलाई चेट्टियार मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा 'तमिल सैंडरोर अवार्ड'; डेवलपर्स इंडिया द्वारा 'वाइब्रेंट इंडियन अवार्ड'; तमिलनाडु के माननीय राज्यपाल से न्यूज 7 चैनल द्वारा 'ईसाई रत्न'; मस्कट तमिल संगम द्वारा 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' शामिल हैं। उन्होंने 2005 में तत्कालीन माननीय राष्ट्रपति, भारत सरकार, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के हाथों भारत सरकार का संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त किया।